वराङ्चरित का महाकाव्यत्व

डॉ. देवाश्रय प्रसाद सिंह

वाराङ्चरित जैन चरित काव्यों में संस्कृत का प्रथम चरितकाव्य है। इसमें 2815 श्लोक विविध वृत्तों में प्रणीत है। प्रस्तुत काव्य आचार्य जटासिंहनन्दी द्वारा विरचित है। इसका रचनाकाल सातवीं शती के उत्तरार्द्ध माना जाता है।

काव्यशास्त्रियों ने काव्य की विभिन्न विधाओं के लक्षण एवं स्वरूप पर व्यापक रूप से विचार किया है। उनकी कृतियों में महाकाव्य के लक्षणों का विशद् वर्णन प्राप्त होता है। भामहकृत काव्यालङ्कार, दण्डीकृत काव्यदर्श, रुद्रटककृत काव्यालङ्कार, आचार्य हेमचन्द्रकृत काव्यानुशासन आदि इस दृष्टि से उल्लेखनीय है।